प्रकृति की गोद में पुष्पित-पल्लवित हो रहा

झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय

■ डॉ. सुषमा दीक्षित

"सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड की कहानी राज्य में छात्रों को बेहतर शैक्षणिक माहौल उपलब्ध कराते एक ऐसे संस्थान की गाथा है जिसने बेहद कम समय में शिक्षा जगत में अपनी धमक दिखाई। वह भी देश के एक ऐसे क्षेत्र से संबद्ध रहते हुए जिसे कतई शिक्षा के हब के रूप में नहीं जाना जाता।"

रांची शहर से लगभग 25 किलोमीटर दूर ब्रांबे में पचास एकड़ में फैले झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर में प्रवेश करते ही सहसा प्रतीत होता है कि आप किसी नयी दुनिया में आ गये हों। जहां न तो बाहरी दुनिया का कोलाहल है और न ही प्रदूषण की आंच। यहां तो बस प्रकृति की गोद में हंसते-मुस्कराते शिक्षा के मंदिर जिनमें देश के कोने-कोने से आये विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस सुरम्य वातावरण में छात्रों को परिसर में ही छात्रावास में रहकर शिक्षा लेते हुए देखकर लगता है कि शायद प्राचीन भारत में ऐसे ही गुरुकुल हुआ करते होंगे।

पिछले पांच वर्षों में झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय ने लगभग सवा सौ करोड़ रुपये व्यय कर विभिन्न विषयों के 22 विभाग तैयार किये हैं जिनमें लगभग दो हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इन छात्रों को उनके विषय में महारत दिलाने के लिए डेढ़ सौ शिक्षक विश्वविद्यालय में हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति डारलैंडो खटिंग स्वयं न्यूक्लियर फिजिक्स के प्रोफेसर हैं। विश्वविद्यालय में उन्होंने संस्कृति अध्ययन संकाय (स्कूल फॉर स्टडी ऑफ कल्चर) की बड़े महत्त्व के साथ स्थापना करायी। इसके अंतर्गत चार विभिन्न विशेषज्ञताओं के विभाग बनाये गये हैं। इनमें 'भारतीय संस्कृति अध्ययन केंद्र', 'आदिवासी एवं पारंपरिक विधि केंद्र', 'संगीत एवं दृश्यकला विभाग' एवं 'आदिवासी लोकगायन, भाषा और साहित्य' शामिल हैं। इन विभागों में से कई तो देश में अपने तरह के अनूठे प्रयोग हैं जिनका उद्देश्य आदिवासी भाषा, साहित्य और संस्कृति की रक्षा और परिवर्धन है।

विश्वविद्यालय के भाषा संकाय में जहां इसके संकायाध्यक्ष जाने माने रंगकर्मी और अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध विद्वान प्रोफेसर बीपी सिन्हा के अथक प्रयासों से अत्यंत समृद्ध अंग्रेजी विभाग की स्थापना की गयी है वहीं सेंटर फॉर ईस्ट लैंग्वेजेज़ (चीनी, कोरियाई और तिब्बती भाषा) की भी स्थापना की गयी है।

इनके अलावा विश्वविद्यालय में जनसंचार और मीडिया प्रौद्योगिकी संकाय, प्रबंधन विज्ञान संकाय, प्राकृतिक विज्ञान संकाय जिसमें अनुप्रयुक्त गणित, भौतिकी एवं रसायन विज्ञान के और जीव विज्ञान के समृद्ध विभाग शामिल हैं, नैनो प्रौद्योगिकी केंद्र, ऊर्जा अभियांत्रिकी विभाग और संगणक विज्ञान केंद्र (मोबाइल प्रौद्योगिकी) वाले अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी संकाय, तीन विभागों वाले प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संकाय, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय और शिक्षा संकाय समेत सात अन्य संकाय भी स्थापित किये गये हैं।

विश्वविद्यालय का पूरा उद्देश्य छात्रों को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेषज्ञ बनाने के साथ ही उन्हें भारतीय संस्कृति, भाषा और आदिवासी सभ्यता से जोड़ना भी है।

विश्वविद्यालय के दूरदर्शी कुलपति प्रोफेसर खटिंग ने अंग्रेजों की बनायी हुई भारतीय शिक्षा व्यवस्था की लीक से हटकर यहां अधिकतर विषयों में इंटर या कक्षा बारह की शिक्षा के बाद ही छात्रों को पांच वर्षों के एकीकृत स्नातक एवं परास्नातक अध्ययन कार्यक्रम में प्रवेश दिया है। कुलपति ने 'नेशन संवाद' को विशेष बातचीत में बताया कि विश्वविद्यालय में पांच वर्षों के एकीकृत शैक्षणिक कार्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों को यह छूट दी गयी है कि अपने अध्ययन के दौरान वह देश में 2007 के अधिनियम के तहत स्थापित 15 केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से किसी भी अन्य विश्वविद्यालय का भी एक वर्ष का कोई अन्य अध्ययन कार्यक्रम भी अपनी पसंद से पूरा कर सकेंगे और उनकी उपाधि में उक्त अध्ययन कार्यक्रम का भी उल्लेख किया जायेगा।

प्रोफेसर खटिंग ने बताया कि इन सभी विश्वविद्यालयों से इस आशय का समझौता किया गया है कि वह झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों को उनके इच्छित शैक्षणिक कार्यक्रमों में अपने यहां एक वर्ष का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर देंगे। विश्वविद्यालय ने अमेरिका, चीन, कोरिया, थाइलैंड और एस्टोनिया के विश्वविद्यालयों के साथ छात्रों के एक्स्चेंज और आपसी सहयोग के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर भी किये हैं।

खस्ताहाल उच्च शिक्षा व्यवस्था वाले झारखंड में झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आशा की नयी किरण लेकर आया है। ■

शिक्षा जगत में जबरदस्त मौजूदगी

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड के कुलपति **डारलैंडो खटिंग** से कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करने के लिए **नेशन संवाद** के **रोहित** ने भेंट वार्ता की। यहां प्रस्तुत हैं उसके कुछ प्रमुख अंशः

- **विश्वविद्यालय में फिलहाल कुल कितने विभाग हैं और इनमें कितने छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं?**

फिलहाल कुल 22 विभाग हैं जिनमें तकरीबन दो हज़ार छात्र अलग-अलग विषयों की तालीम ले रहे हैं। इनमें से करीब 40% छात्र ऐसे हैं जो मूल रूप से झारखंड के रहने वाले हैं।

- **विश्वविद्यालय में कितने शिक्षक शिक्षण कार्य में लगे हैं और कितने झारखंड के हैं?**

इस वक्त हमारे यहां प्रोफेसर, एसोशिएट प्रोफेसर और असिस्टेंट प्रोफेसर मिलाकर करीब 150 अनुभवी शिक्षक हैं, जिनमें से 90 नियमित व शेष कॉन्ट्रैक्ट पर या गेस्ट फैकल्टी हैं। वहीं ऐसे शिक्षकों की संख्या जो मूल रूप से झारखंड के हैं, करीब 25 है।

- **कौन-कौन से प्रमुख पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय में चलाये जाते हैं?**

देखिए, हमारी यूनिवर्सिटी में छात्रों को 9 शाखाओं के अंतर्गत 22 विभिन्न विषयों की पढ़ाई करायी जाती है, जिनमें मास कम्यूनिकेशन, फॉरेन लैंगवेज़, इजीनियरिंग, मैनेजमेंट और कल्चरल स्टडीज़ आदि प्रमुख हैं।

- **फॉरेन लैंगवेज़ और कल्चरल स्टडीज़ के बारे में विस्तार से बतायें। इनके अंतर्गत किन भाषाओं व संस्कृतियों की पढ़ाई करायी जाती है?**

फॉरेन लैंगवेज़ में हमारे यहां छात्रों को चीनी, कोरियाई और तिब्बती भाषाओं के बारे में बताया जाता है। साथ ही इन भाषाओं के प्रयोगों से जुड़ी कई अहम जानकारियां भी उपलब्ध करायी जाती हैं। वहीं दूसरी तरफ कल्चरल स्टडीज़ में हमारे कुल चार विभाग हैं जहां इंडिजेनस कल्चर, ट्राइबल लॉ, म्यूज़िक एंड परफार्मिंग आर्ट्स और ट्राइबल लैंगवेज एंड लिट्रेचर की पढ़ाई होती है।

- **आज के दौर में पढ़ाई के बाद प्लेसमेंट भी एक अहम ज़रूरत बन गयी है। इस दिशा में विश्वविद्यालय कहां खड़ा है?**

जहां तक प्लेसमेंट का सवाल है, जुलाई 2014 में इस यूनिवर्सिटी से पीजी के छात्रों की पहली टोली निकलेगी। विश्वविद्यालय छात्रों के प्लेसमेंट के लिए गंभीर है। इस दिशा में हमारी कुछ कंपनियों से बातचीत चल रही है और पूरी उम्मीद है कि कंपनियां यहां के छात्रों की टैलेंट को पहचान कर उन्हें मौका देंगी।

- **आज जहां चारों ओर ज़बरदस्त प्रतिस्पर्धा का माहौल है, ऐसे में कई बार छात्र तनाव से भी ग्रस्त हो जाते हैं। आपकी यूनिवर्सिटी अपने छात्रों को तनावमुक्त बनाये रखने के लिए क्या करती है?**

हम इस बात का भरपूर ध्यान रखते हैं कि हमारे यहां छात्रों में प्रतिस्पर्धा की वजह से किसी प्रकार का तनाव न आये। इसके लिए यूनिवर्सिटी कई तरह के रिक्रीएशन प्रोग्राम आयोजित करती रहती है जिससे पढ़ाई के बीच छात्र तनाव को दूर भगाकर अपनी रुचि के कार्यों से खुद में और भी निखार ला सकें।

- **विश्वविद्यालय की कुछ खास उपलब्धियां क्या हैं?**

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड एक नया संस्थान है। लेकिन संस्थान ने काफी कम समय में ही अपना एक अलग मुकाम बना लिया है और शिक्षा जगत में आज इसकी एक विशिष्ट पहचान है। सन् 2009 में स्थापित 15 नये विश्वविद्यालयों में सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड को यूजीसी की तरफ से सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय के खिताब से नवाज़ा गया। शैक्षणिक सुविधाओं, वित्त और प्रबंधन के आधार पर हम पूरे देश में अव्वल रहे। यह पूरे संस्थान के लिए गौरव का पल था। इसके अलावा संस्थान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें 2012 में मिला वर्ल्ड एजुकेश्नल कांग्रेस अवार्ड, 2013 में मलेशिया में मिला एजुकेशन लीडरशिप अवार्ड और 2013 में ही मिला गांधी सम्मान अवार्ड प्रमुख हैं। ■